डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 23, यीशु, मृत्यु/पुनरुत्थान

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन और न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला है। यह सत्र 23 है, यीशु, मृत्यु/पुनरुत्थान।

हम उन प्रमुख विषयों या उद्देश्यों को देख रहे हैं जो पुराने नियम की पूर्ति के प्रकाश में यीशु की मृत्यु से क्या हासिल होता है, यह सिखाने के नए नियम के विकास के इर्द-गिर्द केंद्रित हैं।

हमने यीशु की मृत्यु को अंतिम समय के क्लेश के उद्घाटन के रूप में देखा है। हमने यीशु की मृत्यु को इस्राएल के निर्वासन के रूप में देखा है। यीशु की मृत्यु दुष्ट शक्तियों पर विजय है।

यीशु की मृत्यु परमेश्वर के लोगों के लिए छुड़ौती है। यीशु की मृत्यु पुराने नियम की पूर्ति करती है। यीशु की मृत्यु को पापों के लिए शुद्धिकरण प्रदान करने के रूप में भी चित्रित किया गया है।

तो, इब्रानियों, एक बार फिर, इब्रानियों अध्याय 9। इब्रानियों अध्याय 9 और श्लोक 16 से शुरू करते हैं। इब्रानियों अध्याय 9, वसीयत के मामले में, इसे बनाने वाले की मृत्यु को साबित करना आवश्यक है क्योंकि वसीयत तभी लागू होती है जब कोई मर जाता है। यह तब तक प्रभावी नहीं होती जब तक कोई जीवित है।

यही कारण है कि पहली वाचा भी बिना खून के लागू नहीं हुई। जब मूसा ने लोगों को व्यवस्था की हर आज्ञा सुना दी, तो उसने बछड़ों का खून, पानी, लाल ऊन और जूफा की डालियाँ लेकर सभी लोगों पर छिड़का। उसने कहा कि यह वाचा का खून है जिसे परमेश्वर ने तुम्हें पालन करने की आज्ञा दी है।

इसी तरह, उसने तम्बू और उसके अनुष्ठानों में इस्तेमाल की जाने वाली हर चीज़ को खून से छिड़का। वास्तव में, व्यवस्था की माँग है कि लगभग हर चीज़ को खून से शुद्ध किया जाए, और खून बहाए बिना, कोई क्षमा नहीं है। इसलिए स्वर्गीय चीज़ों की प्रतियों को बलिदानों के साथ, इन बलिदानों के साथ शुद्ध किया जाना ज़रूरी था, लेकिन स्वर्गीय चीज़ें खुद इनसे बेहतर बलिदानों के साथ।

क्योंकि मसीह ने मानव हाथों से बनाए गए पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं किया, जो कि सच्चे स्थान की केवल एक प्रति थी। वह अब स्वर्ग में प्रवेश कर गया ताकि परमेश्वर की उपस्थिति में हमारे लिए प्रकट हो सके। तो फिर, यीशु के लहू की यह तस्वीर सफाई या शुद्धिकरण प्रदान करती है।

1 यूहन्ना अध्याय 1 परमेश्वर के लोगों के संबंध में अधिक विशिष्ट है। 1 यूहन्ना के अध्याय 1, पद 8 से शुरू करते हुए, यदि हम पाप रहित होने का दावा करते हैं, तो मैं वापस आकर पद 7 पढ़ूंगा, लेकिन यदि हम प्रकाश में चलते हैं जैसा कि वह प्रकाश में है, तो हम एक दूसरे के साथ संगति करते हैं और यीशु, उनके पुत्र का खून हमें शुद्ध करता है या हमें सभी पापों से मुक्त करता है।

यदि हम पाप रहित होने का दावा करते हैं, तो हम खुद को धोखा देते हैं, और सच्चाई हमारे अंदर नहीं है।

यदि हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सभी अधर्म से शुद्ध करने या शुद्ध करने के लिए विश्वासयोग्य और धर्मी है। इसलिए, क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु फिर से पूरी हुई, विशेष रूप से इब्रानियों 9 में, पुराने नियम के बलिदानों को पूरा करने के लिए, और अब, यह यीशु मसीह के माध्यम से पूरा हुआ है, जो पाप से शुद्ध करता है। एक और महत्वपूर्ण विषय लोगों के पापों के लिए प्रतिस्थापन प्रायश्चित के रूप में यीशु मसीह की मृत्यु है।

अब, प्रायश्चित के विभिन्न सिद्धांत हैं। आप लगभग कोई भी व्यवस्थित धर्मशास्त्र की किताब उठाएँ और मसीह की मृत्यु या मसीह के कार्य पर इस अध्याय और क्रूस पर मसीह के कार्य पर अनुभाग को देखें, और आपको प्रायश्चित के विभिन्न सिद्धांत मिलेंगे। हम पहले ही एक के बारे में बात कर चुके हैं, तथाकथित क्राइस्टस विक्टर, जो यह है कि मसीह की मृत्यु दुष्ट शक्तियों पर विजय थी।

यह बुरी शक्तियों की हार थी। आप नैतिक प्रभाव सिद्धांत जैसे सिद्धांतों के बारे में भी पढ़ते हैं। यीशु मसीह की मृत्यु मुख्य रूप से अपने लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम का एक उदाहरण प्रदान करने के लिए थी, एक ऐसा उदाहरण जिसका अनुसरण उसके लोगों को करना चाहिए।

ये दोनों दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण हैं, विशेष रूप से क्राइस्टस विक्टर, जो क्रूस पर मसीह की मृत्यु को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण और एक बहुत ही प्रमुख विषय है। लेकिन मेरे विचार में, जब यीशु की मृत्यु की बात आती है, तो संभवतः सबसे प्रमुख जोर यह है कि यीशु मसीह की मृत्यु ने प्रायश्चित के संदर्भ में क्या हासिल किया, यह समझने के लिए कि यीशु की मृत्यु एक प्रतिस्थापन प्रायश्चित थी। धर्मशास्त्री अक्सर इसे दंडात्मक प्रतिस्थापन दृष्टिकोण कहते हैं।

लेकिन इसके मूल में यह है कि यीशु मसीह की मृत्यु लोगों के लिए एक विकल्प है। पूरे नए नियम में, हम एक समान सूत्र पाते हैं: यीशु हमारे पापों को उठाता है। यीशु हमारे स्थान पर मरता है।

यीशु स्वयं हमारे पापों को अपने ऊपर ले लेता है, और जिस दण्ड के हम हकदार हैं, वह हमारा है। इसलिए वह हमारे पापों को हमारी ओर से उठाता है। इसलिए एक बार फिर से मार्क 10:45 पर लौटें, यीशु सेवा करवाने के लिए नहीं आया, बल्कि सेवा करने और बहुतों के लिए अपने जीवन को छुड़ौती के रूप में देने आया।

इफिसियों 5 पाठ में, इसके समान एक अन्य पाठ जहां यीशु मसीह की मृत्यु हमारे लिए एक बलिदान है। 2 कुरिन्थियों अध्याय 5। मैं बस इतना पढ़ना चाहता हूँ कि आपको इस सामान्य विषय या प्रमुख सूत्र का विचार मिल जाए: अध्याय 5 और श्लोक 21।

परमेश्वर ने यीशु को, जिसमें कोई पाप नहीं था, हमारे लिए पाप बना दिया। ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ। इसलिए, यीशु मसीह पाप बन जाता है, पापबलि बन जाता है।

या यीशु मसीह हमारे पापों और पापों की सज़ा को हमारे लिए ले लेता है। गलातियों के अध्याय 3 और पद 10, मुझे लगता है कि यह भी बहुत महत्वपूर्ण है। गलातियों के अध्याय 3 में पौलुस ने यीशु मसीह की मृत्यु के बारे में चर्चा की है।

पद 10, क्योंकि जो लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा करते हैं, वे शापित हैं, जैसा कि लिखा है। शापित है वह हर कोई जो व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हर बात पर अमल नहीं करता। पद 11 स्पष्ट रूप से बताता है कि जो कोई व्यवस्था पर भरोसा करता है, वह परमेश्वर के सामने धर्मी नहीं ठहरता, क्योंकि धर्मी लोग विश्वास से जीवित रहेंगे।

व्यवस्था विश्वास पर आधारित नहीं है। इसके विपरीत, यह कहता है कि जो व्यक्ति इन बातों को करता है, वह इनके द्वारा जीवित रहेगा। पद 13, मसीह ने हमारे लिए अभिशाप बनकर हमें व्यवस्था के अभिशाप से छुड़ाया।

और इस तरह के ग्रंथों के प्रकाश में, मुझे उन लोगों को मानना मुश्किल लगता है जो सुझाव देते हैं कि प्रतिस्थापन प्रायश्चित एक नया नियम शिक्षण नहीं है या यह एक प्रमुख विषय नहीं है। इस तरह के ग्रंथ बताते हैं कि यह है। मसीह हमारे लिए एक अभिशाप बन जाता है।

अर्थात्, वह क्रूस पर पाप के लिए अभिशाप को अपने ऊपर ले लेता है। मेरा मानना है कि 1 पतरस अध्याय 2 और पद 24 वही है जो मैं चाहता हूँ। हम पहले ही पद 19 पढ़ चुके हैं, और हम मसीह के बहुमूल्य लहू से खरीदे गए हैं, जो एक दोषरहित मेमना है।

और फिर अध्याय 2 की आयत, 1 पतरस अध्याय 2, अब जब तुम शुद्ध हो चुके हो, अब जब तुमने सत्य का पालन करके खुद को शुद्ध कर लिया है ताकि तुम एक दूसरे के लिए सच्चा प्यार करो, एक दूसरे से दिल से गहराई से प्यार करो। क्योंकि तुम फिर से पैदा हुए हो, नाशवान बीज से नहीं, बल्कि अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवित और स्थायी वचन के द्वारा। वह पाठ मैं भी नहीं चाहता था, इसलिए मैं वही कर रहा हूँ जो मैंने कुछ व्याख्यान पहले किया था।

लेकिन मुझे लगता है कि यह वास्तव में श्लोक 18 था, और उसके बाद, यीशु मसीह ने हमारी ओर से अपनी मृत्यु के द्वारा हमें छुड़ाया। यीशु मसीह हमें छुड़ाता है, परमेश्वर हमें छुड़ाता है या मसीह के लहू के द्वारा हमें शुद्ध करता है, एक दोषरहित मेमना। इसलिए, यीशु मसीह को फिर से एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो पुराने नियम की पूर्ति में एक बलि के मेमने के रूप में, फिर अपने लोगों की ओर से मर जाता है।

यीशु के अपने लोगों के लिए मरने, अपने लोगों की खातिर यीशु की मृत्यु के इस सामान्य सूत्र को प्रदर्शित करने के लिए अन्य ग्रंथों का सहारा लिया जा सकता है। यीशु हमारे लिए अभिशाप बन गए, ताकि यीशु हमारे पापों को वहन करें, यीशु हमारे स्थान पर हमारे लिए मर गए, यीशु ने उस अभिशाप या दंड को अपने ऊपर ले लिया जिसके हम हकदार हैं और जो हमारा है, यह एक प्रमुख सूत्र प्रतीत होता है। इसके संबंध में, ग्रंथों का एक और समूह जो महत्वपूर्ण है, वह है लोगों के पापों के प्रायश्चित के रूप में यीशु का संदर्भ।

मुझे पता है कि प्रायश्चित शब्द पर बहस होती रहती है। इसके पीछे ग्रीक शब्द है हेलोस्कोस, संज्ञा रूप और क्रिया रूप हैलोस्कामाई, और बहस में इससे संबंधित शब्दों का समूह यह है कि उनका अनुवाद कैसे किया जाए। इसे प्रायश्चित के रूप में अनुवाद करने की एक लंबी परंपरा है।

यीशु हमारे पापों के लिए प्रायश्चित है। अगर आप उन आयतों के अंग्रेज़ी अनुवादों की तुलना करना शुरू करें जो मैं पढ़ने जा रहा हूँ, तो आप देखेंगे कि उनमें से कुछ में अंतर है। कुछ लोग प्रायश्चित कहेंगे, और दूसरे लोग बलिदान जैसी दूसरी भाषा का इस्तेमाल करेंगे।

एनआईवी, एक जगह, इसे प्रायश्चित के बलिदान के रूप में अनुवादित करता है। अनुवाद अक्सर अस्पष्टता को दर्शाने या इस विचार से दूर जाने के लिए अधिक तटस्थ भाषा का उपयोग करेंगे कि यीशु मसीह की मृत्यु एक प्रायश्चित है। लेकिन फिर से इब्रानियों अध्याय से शुरू करते हैं या वास्तव में हम पहले यूहन्ना अध्याय 2 और श्लोक 2 को देखेंगे। वह, यानी यीशु, हमारे पापों के लिए प्रायश्चित बलिदान है।

प्रायश्चित बलिदान शब्द का अनुवाद NIV में इस तरह किया गया है कि इसका अनुवाद प्रायश्चित के रूप में किया जा सकता है। हम थोड़ी देर में इस बारे में बात करेंगे कि इसका क्या मतलब है। इब्रानियों अध्याय 2 और पद 17 में भी यीशु मसीह को इसी तरह प्रस्तुत किया गया है, और मुझे लगता है कि NIV ने भी इसका इसी तरह अनुवाद किया है।

लेकिन इब्रानियों अध्याय 2 और पद 17, इब्रानियों 2:17, इस कारण से, उसे उनके जैसा बनना है, हर तरह से पूरी तरह से मानव, ताकि वह परमेश्वर की सेवा में एक दयालु और वफादार महायाजक बन सके और पापों के लिए प्रायश्चित कर सके। यह क्रिया का रूप है, वही शब्द जिसका अनुवाद प्रायश्चित या पापों के लिए प्रायश्चित करने के रूप में किया जा सकता है। फिर, शायद सबसे प्रसिद्ध पाठ जिसके बारे में हम थोड़ा और विस्तार से बात करेंगे, वह है रोमियों अध्याय 3। रोमियों अध्याय 3 पद 21 से शुरू होता है, जब पौलुस ने सारी मानवता की दुर्दशा और पापपूर्णता का प्रदर्शन किया है, वास्तव में मानवता की पापपूर्णता को साबित करने की कोशिश नहीं की है, बल्कि वास्तव में मानवता को उनके पाप के लिए दोषी ठहराया है और यह प्रदर्शित किया है कि परमेश्वर अपने क्रोध और मानवता को उंडेलने में न्यायी है।

अब पौलुस कहता है, परन्तु अब, रोमियों 3 की आयत 21 में, व्यवस्था के बिना परमेश्वर की धार्मिकता प्रगट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं। यह धार्मिकता उन सब को दी जाती है जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा। यहूदी और गैर-यहूदी में कोई भेद नहीं, क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, परन्तु यीशु मसीह के द्वारा छुटकारे के द्वारा उसके अनुग्रह से सेंटमेंट धर्मी ठहराए जाते हैं।

तो, यहाँ फिर से छुटकारे की भाषा है, यह धारणा कि यीशु मसीह की मृत्यु उसके लोगों को खरीदती है, मुक्त करती है, मुक्ति दिलाती है और उन्हें मुक्त करती है। फिर, श्लोक 25 में, परमेश्वर ने मसीह को प्रायश्चित के बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया। यहाँ फिर से वह शब्द है जिसका अनुवाद प्रायश्चित किया जा सकता है।

परमेश्वर ने मसीह को अपने लहू के बहाने प्रायश्चित या प्रायश्चित के बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया। इसलिए, क्रूस पर मसीह की मृत्यु को प्रायश्चित या प्रायश्चित के बलिदान के रूप में समझा जाता है। हम इसे कैसे समझें? प्रायश्चित की धारणा परमेश्वर के क्रोध को शांत करने, परमेश्वर के क्रोध को दूर करने का सुझाव देती है, और विचार यह है कि यीशु स्वयं, क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा, परमेश्वर के क्रोध को दूर करता है, परमेश्वर के क्रोध को अपने ऊपर ले लेता है, संभवतः हमारे पापीपन के कारण, क्योंकि वह क्रूस पर हमारे पापों को वहन कर रहा है।

अब इस पर विवाद हो चुका है, और फिर से, एनआईवी ने इसका अनुवाद प्रायश्चित के बलिदान के रूप में किया है। मैं पूरी तरह से निश्चित नहीं हूँ कि क्या यह सिर्फ अस्पष्टता व्यक्त करने और एक व्यापक वाक्यांश चुनने के लिए है या फिर वे जानबूझकर उस चीज़ से बचने की कोशिश कर रहे हैं जो प्रायश्चित में लिपटी हुई है, परमेश्वर के क्रोध को टालने का यह विचार, पुत्र की मृत्यु के माध्यम से परमेश्वर के क्रोध को संतुष्ट करना जो अपने पाप को हम पर ले लेता है और अभिशाप और परमेश्वर के न्याय को सहन करता है। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि हमें इसे प्रायश्चित के संदर्भ में नहीं समझना चाहिए; यह शब्द हिलास्टेरियन एक प्रायश्चित नहीं है, लेकिन हमें इसे प्रायश्चित के रूप में समझना चाहिए, यानी पापों को मिटाना, कि पौलुस के मन में जो है वह बस पापों को हटाना और मिटाना है।

मुझे लगता है, उदाहरण के लिए, जेम्स डन ने रोमन्स इन द वर्ड बाइबिल कमेंट्री सीरीज़ में अपनी टिप्पणी में इस दृष्टिकोण का समर्थन किया है। लेकिन मुझे लगता है कि हमें इसे प्रायश्चित के संदर्भ में समझना चाहिए, कि यीशु मसीह की मृत्यु एक तरह से परमेश्वर के क्रोध को संतुष्ट करती है, कि यीशु हमारे पापों को सहन करता है और इसलिए क्रूस पर उसकी मृत्यु परमेश्वर के क्रोध को अपने ऊपर लेकर टालती है, कि वह अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के क्रोध को टालता है। वास्तव में, यदि आप वापस जाते हैं और रोमियों के अध्याय 1 और श्लोक 18 को पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं कि परमेश्वर का क्रोध पहले से ही मौजूद है।

अध्याय 1 और पद 18 की शुरुआत स्वर्ग से परमेश्वर के क्रोध के प्रकट होने से होती है, जो उन सभी लोगों की अधर्मिता और दुष्टता के विरुद्ध है जो अपनी दुष्टता से सत्य को दबाते हैं। मूल रूप से, अध्याय 1 और अध्याय 2 का शेष भाग और अध्याय 3 में उस कथन को उचित ठहराया जाएगा और प्रदर्शित किया जाएगा कि यह कैसे और क्यों है कि परमेश्वर का क्रोध प्रकट हो रहा है। इसलिए, परमेश्वर का क्रोध पहले से ही पॉल के तर्क का एक तत्व है, इसलिए मुझे लगता है कि यहाँ यीशु की मृत्यु को प्रायश्चित के रूप में देखना वैध है।

शायद हमें इसे इससे कहीं ज़्यादा के रूप में देखना चाहिए, लेकिन निश्चित रूप से, यीशु की मृत्यु एक प्रायश्चित है। यानी, यीशु को देखा जाता है, उनकी मृत्यु को परमेश्वर के क्रोध को संतुष्ट करने के रूप में देखा जाता है, जहाँ यीशु हमारे लिए परमेश्वर के क्रोध को सहन करता है क्योंकि वह हमारे पापों को अपने ऊपर ले लेता है। यह भी संभव है, शब्द को ज़्यादा पढ़े बिना, कि हमें इस शब्द को पुराने नियम में दया के आसन के संदर्भ में पढ़ना चाहिए, खासकर प्रायश्चित के दिन।

यहाँ सेप्टुआजेंट में भी यही शब्द पुराने नियम के प्रायश्चित दिवस के विवरण में दया के आसन को संदर्भित करने के लिए इस्तेमाल किया गया है। इसलिए, यह भी संभव है कि हमें यह समझना

चाहिए कि अब मसीह ही वह स्थान है जहाँ प्रायश्चित प्राप्त होता है। मसीह ही एकमात्र है, यह मसीह में ही है जहाँ हम एक ऐसा स्थान पाते हैं जहाँ प्रायश्चित सुरक्षित है और जहाँ पुराने नियम की पूर्ति में प्रायश्चित होता है।

इसलिए, इस शब्द का उपयोग करके, लेखक एक बार फिर मसीह की मृत्यु को प्रायश्चित के बलिदान या विश्वास द्वारा प्राप्त किए जाने वाले उसके खून के बहाने के माध्यम से प्रायश्चित के रूप में प्रस्तुत कर सकता है। उसने ऐसा किया। अर्थात्, उसने मसीह को अपनी धार्मिकता को प्रदर्शित करने के लिए प्रायश्चित के बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया क्योंकि, अपनी सहनशीलता में, उसने पहले किए गए पापों को बिना दण्ड के छोड़ दिया था।

यह संभवतः पुराने नियम के तहत पापों का संदर्भ है। उसने ऐसा वर्तमान समय में अपनी धार्मिकता को प्रदर्शित करने के लिए किया, ताकि वह न्यायी या धार्मिक हो और जो यीशु में विश्वास रखने वालों को न्यायोचित ठहराता हो। क्या आप समझ रहे हैं कि पौलुस क्या कह रहा है? किसी न किसी तरह, परमेश्वर को पापियों को न्यायोचित ठहराना ही होगा।

हम उद्धार के विषय के संबंध में औचित्य के बारे में बाद में और बात करेंगे। लेकिन परमेश्वर को पापियों को उचित ठहराना चाहिए और उनके लिए औचित्य का मार्ग प्रदान करना चाहिए, फिर भी उसे ऐसा इस तरह से करना चाहिए कि उसके अपने न्याय से समझौता न हो। इसलिए पौलुस कहता है कि उसने अपनी धार्मिकता को प्रदर्शित करने के लिए ऐसा किया ताकि वह न्यायी हो और यीशु मसीह में विश्वास रखने वालों को उचित ठहराने वाला हो।

तो, सवाल यह है कि परमेश्वर उन लोगों के लिए धार्मिकता और औचित्य कैसे प्रदान कर सकता है जो पापी हैं? अर्थात्, उन्हें परमेश्वर के सामने धार्मिक और सही स्थिति में घोषित करें जबकि वे पापी हैं और फिर भी अपनी खुद की अखंडता बनाए रखें, फिर भी अपनी खुद की पवित्रता बनाए रखें, और फिर भी अपना खुद का न्याय बनाए रखें। रोमियों 3 में प्रस्तुत विचार यह है कि परमेश्वर ने अपने लोगों के पापों के लिए यीशु मसीह को बलिदान के रूप में प्रदान करके, यीशु मसीह द्वारा अपनी मृत्यु के माध्यम से पाप से पूरी तरह से निपटने के द्वारा, यीशु द्वारा हमारे पापों को अपने ऊपर लेने और पापों के प्रायश्चित के रूप में परमेश्वर के क्रोध को संतुष्ट करने के द्वारा ऐसा किया है। उस आधार पर, परमेश्वर पापियों को धार्मिक घोषित कर सकता है और फिर भी न्यायपूर्ण और धार्मिक हो सकता है।

कभी-कभी, मुझे लगता है कि अगर आप इसे स्वीकार करते हैं, तो हम अक्सर सुसमाचार के बारे में सोचते हैं कि परमेश्वर ने किसी तरह मानकों को कम कर दिया है। परमेश्वर ने पुराने नियम में मानकों को इतना ऊंचा निर्धारित किया। यह कानून का पालन था, और कानून पूर्ण आज्ञाकारिता की मांग करता है। हमने कहीं और पढ़ा है कि यदि आप एक क्षेत्र में गिरते हैं, तो आप सभी के लिए दोषी हैं।

जेम्स, छह अन्य ग्रंथों में कहता है कि यदि आप एक क्षेत्र की अवज्ञा करते हैं, तो आप पूरे कानून के दोषी हैं। इसलिए मानक इतना ऊंचा था कि कोई भी इसे पूरा नहीं कर सकता था, इसलिए भगवान ने मानकों को कम कर दिया, और अब उसका प्यार और उसकी कृपा ने कार्यभार

संभाला, और उसने हमें यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा अपने राज्य में प्रवेश करने दिया। लेकिन सच्चाई से इससे ज्यादा दूर कुछ भी नहीं हो सकता।

रोमियों 3 का संदेश यह है कि परमेश्वर ने मानकों को कम नहीं किया है। परमेश्वर ने प्रवेश को आसान नहीं बनाया है। इसके बजाय, परमेश्वर अपने पुत्र यीशु मसीह के बलिदान के माध्यम से अपने स्वयं के न्याय, धार्मिकता और पवित्रता के मानकों को पूरा करता है।

और इसी आधार पर हम अंदर आते हैं। इसी आधार पर हम परमेश्वर के साथ रिश्ता बना सकते हैं। इसलिए, परमेश्वर की पवित्रता और उसके न्याय में ज़रा भी समझौता नहीं होता।

यह किसी भी तरह से समझौता नहीं है, ताकि वह परमेश्वर न रहे। लेकिन पौलुस यहाँ अन्य बातों के अलावा यह भी कह रहा है कि परमेश्वर पापियों को, जिन्होंने पाप किया है, धर्मी ठहराता है। रोमियों 3 की आयत 23, सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं और मसीह में विश्वास के आधार पर धर्मी ठहराए जाते हैं।

ईश्वर ऐसा कैसे कर सकता है जबकि वह अभी भी न्यायपूर्ण, धार्मिक और पवित्र है? खैर, उसने ऐसा मानकों को कम करके या आवश्यकताओं में किसी तरह की हेराफेरी करके नहीं किया ताकि हम अंदर आ सकें, बल्कि इसके बजाय, ईश्वर ने अपने धार्मिक, पवित्र और न्यायपूर्ण मानकों और आवश्यकताओं को बनाए रखा, लेकिन उसने उन्हें यीशु मसीह के व्यक्तित्व और क्रूस पर उसकी प्रायश्चित मृत्यु में पूरा किया। उदाहरण के लिए, एक और विषय या मूल भाव यीशु मसीह की मृत्यु है। हालाँकि 19वीं और 20वीं शताब्दियों में उदार विद्वानों ने मसीह की मृत्यु को नैतिक प्रभाव के रूप में इस दृष्टिकोण का समर्थन किया।

मसीह की मृत्यु ने मूल रूप से केवल प्रेम और बलिदानपूर्ण प्रेम के लिए एक नैतिक उदाहरण प्रदान किया, जिसका वह लोगों से अनुसरण करने की अपेक्षा करता है। इसमें पर्याप्त सत्य है, लेकिन निश्चित रूप से, एक व्यापक उदाहरण के रूप में, यह इनमें से कुछ अन्य विषयों और उद्देश्यों को देखते हुए विफल हो जाता है, जिन पर हमने विचार किया है। लेकिन निश्चित रूप से, यीशु मसीह की मृत्यु जो कुछ करती है, यदि वह एकमात्र चीज नहीं है, तो वह है परमेश्वर के लोगों के लिए एक उदाहरण प्रदान करना।

हम इसे इफिसियों, अध्याय 5 में पहले ही देख चुके हैं। इफिसियों, अध्याय 5 में, क्रूस पर यीशु मसीह का बलिदान उस बलिदानपूर्ण प्रेम और क्षमा का उदाहरण है जिसे परमेश्वर अपने अनुयायियों में देखना चाहता है। इसलिए, इफिसियों अध्याय 5 और पद 1। इसलिए, प्यारे बच्चों की तरह परमेश्वर के उदाहरण का अनुसरण करें। वस्तुतः, परमेश्वर के अनुकरणकर्ता बनें।

परमेश्वर के उदाहरणों का अनुसरण करें और प्रेम के मार्ग पर चलें, जैसे मसीह ने हमसे प्रेम किया और परमेश्वर के लिए सुगंधित भेंट और बलिदान के रूप में खुद को हमारे लिए दे दिया। शायद किसी अन्य पुस्तक में हमें यीशु की मृत्यु का अनुसरण करने के लिए इतना उदाहरण नहीं मिलता जितना कि हम 1 पतरस और अध्याय 2 में पाते हैं। 1 पतरस अध्याय 2 और आयतें 20 से 25। 1 पतरस 2 20 से 25।

लेकिन अगर आपको गलत काम करने के लिए मार पड़ती है और आप उसे सहते हैं तो यह आपके लिए क्या सम्मान की बात है? लेकिन अगर आप अच्छे काम करने के लिए पीड़ित होते हैं और आप उसे सहते हैं, तो यह परमेश्वर के सामने सराहनीय है। इसके लिए, आपको बुलाया गया था क्योंकि मसीह ने आपके लिए दुख उठाया, आपको एक उदाहरण दिया कि आपको उसके कदमों पर चलना चाहिए। फिर, यह यशायाह के सेवक गीत के अध्याय 53 से लेखक पतरस को उद्धृत करता है।

उसने कोई पाप नहीं किया, और उसके मुँह से कोई छल की बात नहीं निकली। इसलिए, जब उन्होंने उसका अपमान किया और फिर पतरस ने उस पर टिप्पणी करना शुरू किया। जब उन्होंने उसका अपमान किया, तो उसने पलटवार नहीं किया।

जब वह पीड़ित हुआ, तो उसने किसी को धमकी नहीं दी। इसके बजाय, उसने खुद को उसके हाथों में सौंप दिया, जो न्यायपूर्ण न्याय करता है। उसने खुद हमारे पापों को अपने शरीर पर क्रूस पर उठाया।

दरअसल, यही वह पाठ था जिसे मैं पहले देख रहा था। मुझे यकीन नहीं है कि मैं वास्तव में अध्याय 1 को क्या देख रहा था। लेकिन 1 पतरस 2:24 एक और पाठ है जो मसीह के प्रतिस्थापन प्रायश्चित का समर्थन करता है। उसने हमारे पापों को अपने शरीर में क्रूस पर ले लिया ताकि हम पापों के लिए मर सकें और धार्मिकता के लिए जी सकें।

उसके घावों से तुम चंगे हो गए हो। यशायाह 53 से एक और उद्धरण। क्योंकि तुम भेड़ों की तरह भटक गए थे, लेकिन अब तुम अपने चरवाहे के पास लौट आए हो, जो तुम्हारी आत्माओं का निरीक्षक है।

इसलिए, यह दिलचस्प है कि इस अंश में प्रतिस्थापन प्रायश्चित पर जोर दिया गया है। लेकिन मसीह का प्रायश्चित और मसीह की मृत्यु उसके लोगों के लिए अनुसरण करने के उदाहरण हैं। हम इसे प्रकाशितवाक्य की पूरी किताब में भी पाते हैं।

जैसे यीशु मसीह, बलि का मेमना। जैसे यीशु मसीह ने अपने वफादार गवाह के लिए कष्ट सहें और मर गए, वैसे ही उनके अनुयायियों को भी अपने वफादार गवाह के लिए कष्ट सहना और मरना चाहिए। इसलिए, प्रकाशितवाक्य में भी, अन्य बातों के अलावा, यीशु की मृत्यु उनके अनुयायियों के लिए एक उदाहरण प्रदान करती है।

और फिर अंत में, अंतिम बात जिस पर मैं जोर देना चाहता हूँ, और और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन हम इसे यहीं समाप्त करेंगे, और वह यह है कि यीशु मसीह की मृत्यु को भागीदारी या ऐसी चीज़ के रूप में देखा जाता है जिसमें हम भाग लेते हैं। तो आप पाते हैं कि न केवल यीशु हमारे लिए मरते हैं, बल्कि उनकी अपनी मृत्यु हमारे लिए और हमारी ओर से मृत्यु है, और वे हमारे पापों को अपने ऊपर लेते हैं, हमारे पापों को अपने ऊपर लेते हैं, और हमारे पापों के लिए हमारी ओर से मरते हैं, बल्कि हम वास्तव में मसीह से जुड़े होने के कारण वास्तव में उनकी मृत्यु में भाग लेते हैं। हम वास्तव में उनकी मृत्यु में भाग लेते हैं।

रोमियों अध्याय 6 में यह बात पूरी तरह से स्पष्ट हो जाती है जहाँ पौलुस अपने सुसमाचार की एक संभावित गलतफ़हमी का जवाब दे रहा है और वह यह है कि यदि अनुग्रह बढ़ता है तो क्या हमें और भी अधिक पाप करना चाहिए यदि हम पाप कर रहे हैं अनुग्रह बढ़ता है तो और भी अधिक, क्या इसका मतलब यह है कि हमें इसलिए पाप करते रहना चाहिए, और पौलुस का जवाब यह है कि हम जो पाप के लिए मर चुके हैं हम अब और कैसे जी सकते हैं लेकिन फिर वह आगे जाता है और कहता है या क्या तुम नहीं जानते कि हम सभी जिन्होंने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया है, हम उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लिए गए हैं। इसलिए, हम उसके साथ मृत्यु में बपतिस्मा के माध्यम से दफनाए गए ताकि जैसे मसीह मरे हुआं में से जी उठा, हम भी जीवन की नईता में चल सकें। हम यही बात बाद में कुलुस्सियों अध्याय 2 में और कुलुस्सियों अध्याय 2 में पौलुस के तर्क में पाते हैं दरअसल, मैं अध्याय 2 की आयत 11 का समर्थन करूँगा, उसमें भी तुम खतना किए गए थे, जो मानव हाथों से नहीं किया गया था, तुम्हारा शरीर द्वारा शासित पूरा स्वशासन तब समाप्त हो गया जब तुम मसीह द्वारा बपतिस्मा में उसके साथ दफनाए गए थे। रोमियों 6 में पौलुस ने जो कहा, उसके समान ही एक स्पष्ट संदर्भ है कि हम उसकी मृत्यु और उसके दफन के साथ मसीह के साथ एकजुट हो गए हैं।

दूसरे शब्दों में, फिर से, मसीह न केवल हमारे लिए मरता है, बल्कि उसकी मृत्यु हमारी भी हो जाती है। दूसरे शब्दों में पाप के लिए अंतिम दंड मृत्यु बन जाता है। उत्पत्ति अध्याय 1 पर वापस जाएँ, और आप पाएँगे कि यीशु स्वयं पाप के लिए अंतिम दंड भुगत रहा है, जो कि हमारे लिए मृत्यु है, लेकिन साथ ही, हम मसीह के साथ और उसकी अपनी मृत्यु में शामिल हो गए हैं।

उसकी मृत्यु, किसी तरह से, हमारी हो जाती है क्योंकि हम उसके साथ मरते हैं, और रोमियों 6 में पौलुस का पूरा मुद्दा और मुझे लगता है कि कुलुस्सियों में भी, यह है कि यीशु मसीह की मृत्यु वास्तव में इस वर्तमान बुरे युग के प्रभुत्व और शासन को समाप्त करती है। हम खुद को इस वर्तमान युग के प्रभुत्व के अधीन पाते हैं। हम इस वर्तमान युग के गुलाम हैं।

यह हम पर हावी है। पाप और मृत्यु हम पर हावी हैं, और हम इसके गुलाम हैं। रोमियों 6 का बाकी हिस्सा यह दर्शाता है।

यदि आप पद 12 और उसके बाद के भाग को पढ़ें, तो हमें पाप के गुलाम के रूप में दर्शाया गया है। इसलिए, यीशु मसीह की मृत्यु वह मृत्यु है जो पुराने युग को समाप्त करती है। यह उसे प्रभुत्व से और पुराने युग के अधीन जीवन से मुक्त करती है।

लेकिन रोमियों 6 में आगे बताया गया है कि यीशु का पुनरुत्थान एक नए युग की शुरुआत करता है। इसलिए, दूसरे शब्दों में, पाप के प्रभुत्व से बचने का एकमात्र तरीका यही है कि पॉल कहता है कि क्या तुम नहीं जानते कि तुम पाप के लिए मर चुके हो? इसका क्या मतलब है? पाप के शासन को लाने के लिए मृत्यु आवश्यक है और यह पाप के इस युग को अपना मार्ग चलाने की अनुमति देता है। इसलिए, हमारे जीवन में पाप की शक्ति को तोड़ने का एकमात्र तरीका, पुराने युग के शासन को तोड़ने का एकमात्र तरीका, मृत्यु का होना है।

पॉल को पूरा यकीन है कि यीशु मसीह के ज़रिए मृत्यु हुई है, और इसलिए, हमने उस मृत्यु का अनुभव किया है। पॉल कह सकता है कि क्या तुम नहीं जानते कि तुम पाप के लिए मर चुके हो? वह शायद जीवित व्यक्तियों से बात कर रहा है, और जैसा कि हम आज पढ़ते हैं, हम शारीरिक रूप से जीवित हैं। लेकिन पॉल का कहना है कि हम पाप के लिए मर चुके हैं।

शासन और प्रभुत्व को समाप्त करती है। हमने मृत्यु का अनुभव किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ने के कारण किया है जो वास्तव में मर चुका है, और वह यीशु मसीह है। इसलिए, यह विचार कि हम मसीह की मृत्यु में भाग लेते हैं, न केवल हमारी ओर से है बल्कि हम वास्तव में विश्वास में उसके साथ जुड़कर मसीह की मृत्यु में किसी तरह से भाग लेते हैं, और वह मृत्यु पाप के प्रभुत्व और पुराने युग के प्रभुत्व को समाप्त करती है और फिर यीशु मसीह का पुनरुत्थान एक नए युग, एक नए युग का उद्घाटन करता है।

इसलिए, यीशु की मृत्यु को भागीदारी के रूप में देखा जाता है, कुछ ऐसा जिसमें हम यीशु मसीह की मृत्यु में शामिल होकर भाग लेते हैं। एक ऐसी मृत्यु जो पुराने युग को समाप्त करती है, जो हमारे ऊपर मृत्यु और पाप के शासन को समाप्त करती है, और हमने मसीह से जुड़ने के कारण उस मृत्यु का अनुभव किया है। इसलिए, यीशु कह सकते हैं, पॉल कह सकते हैं कि क्या तुम नहीं जानते कि तुम पाप के लिए मर चुके हो? क्योंकि तुम उस व्यक्ति से जुड़ गए हो जो वास्तव में पुराने युग और पाप और मृत्यु के शासन को समाप्त करने के लिए मर चुका है।

अब, यह हमें मसीह के पुनरुत्थान के विषय पर लाता है, और मसीह के पुनरुत्थान और यीशु की मृत्यु के बीच के संबंध को समझना महत्वपूर्ण है। दोनों को पूरे शास्त्र में आवश्यक सहसंबंध के रूप में एक साथ माना जाता है। आप एक के बिना दूसरे को प्राप्त नहीं कर सकते हैं और हम यह देखना शुरू करेंगे कि ऐसा क्यों है क्योंकि हम पुनरुत्थान के महत्व को समझना शुरू करते हैं।

लेकिन मैं इस पर विशेष रूप से विचार करने से पहले यह कहना चाहता हूँ कि यह दिलचस्प है कि जब हम सुसमाचार के बारे में सोचते हैं तो हम अक्सर इसके बारे में सीमित तरीके से सोचते हैं। सुसमाचार यीशु के हमारे पापों के लिए मरने की खुशखबरी है। इसलिए, यीशु हमारे पापों के लिए मरता है ताकि हम उसके साथ रहने के लिए स्वर्ग जा सकें।

यह संभवतः सुसमाचार के बारे में अधिकांश लोगों की समझ में बहुत ही प्राथमिक स्तर पर है। यीशु के मेरे पापों के लिए मरने की खबर और मुझे, जैसा कि आप में से कुछ लोगों ने सोचा होगा, चार आध्यात्मिक नियमों के साथ बड़ा किया गया था, और इसमें यह विचार है कि यीशु मेरे पापों के लिए क्रूस पर मरे और मैं एक भयानक पापी हूँ। मैंने अपने पापों के माध्यम से परमेश्वर को नाराज़ किया है, और अब यीशु की मृत्यु, जैसा कि हमने पिछले खंड में पहले ही देखा है, यीशु की मृत्यु वह है जो मेरे पापों का ख्याल रखती है ताकि अब मैं परमेश्वर के साथ संबंध बना सकूँ।

या आपने दो चट्टानों के बीच खाई और उस पर एक क्रॉस पड़ा हुआ देखा होगा, इसलिए यीशु की मृत्यु पाप द्वारा बनाई गई खाई को पार करने का एकमात्र तरीका है जो परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते को तोड़ती है। और इसलिए, जब हम सुसमाचार के बारे में सोचते हैं, तो हम आमतौर पर यीशु को हमारे पापों के लिए मरने के बारे में सोचते हैं। हालाँकि, जब मैंने न्यू टेस्टामेंट और

वास्तव में स्कॉट मैकनाइट की एक किताब किंग जीसस गॉस्पेल पढ़ी, तो इसने मुझे एक बार फिर से इसकी याद दिला दी, और जब मैंने इसे पढ़ा तो और भी जोरदार तरीके से।

यह एक छोटी सी किताब है, चाहे आप इससे सहमत हों या नहीं, यह बहुत चुनौतीपूर्ण है और आपको सुसमाचार को एक नई रोशनी में देखने में मदद करती है। लेकिन जब मैं नया नियम पढ़ता हूँ, तो मुझे फिर से इस तथ्य की याद आती है कि पुनरुत्थान सुसमाचार और आरंभिक चर्च के प्रचार का उतना ही हिस्सा है जितना कि मसीह की मृत्यु। तो, 1 कुरिन्थियों 15 पर वापस जाएँ, पौलुस ने क्या कहा जब उसने कहा कि मैं तुम्हें वह सुसमाचार देता हूँ जो मुझे दिया गया था कि मसीह शास्त्र के अनुसार मर गया कि वह कौन है जिसे दफनाया गया और शास्त्र के अनुसार वह तीसरे दिन फिर से जी उठा।

जब आप प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रारंभिक चर्च के उपदेशों को पढ़ते हैं, तो प्रेरितों के काम 2 और पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के उपदेश को पढ़ें। प्रेरितों के कुछ अन्य उपदेशों या भाषणों को पढ़ें और पुनरुत्थान इस खुशखबरी के हिस्से के रूप में सुसमाचार में एक अभिन्न भूमिका निभाता है। तो, खुशखबरी क्या है? हाँ, यह है कि इस्राएल की कहानी के चरमोत्कर्ष और पुराने नियम की कहानी के चरमोत्कर्ष में यीशु, अब लोगों के पापों के लिए बलिदान है, लेकिन अच्छी खबर यह भी है कि यीशु मसीह को मृतकों में से उठाया गया था कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से उठाया।

इसलिए, शुरुआत में ही, पुनरुत्थान के विषय को देखने से पहले, मुझे लगता है कि खुद को यह याद दिलाना महत्वपूर्ण है कि पुनरुत्थान सुसमाचार का उतना ही महत्वपूर्ण हिस्सा है जितना कि मसीह की मृत्यु है और ये दोनों एक साथ हैं। आप एक के बिना दूसरे को प्राप्त नहीं कर सकते हैं, और चर्च को अपने उपदेश और शिक्षा और सुसमाचार की घोषणा दोनों पर जोर देना चाहिए। अब, पुनरुत्थान के लिए पुराने नियम की पृष्ठभूमि संभवतः उत्पत्ति अध्याय 1 से 3 तक जाती है जहाँ बगीचे के बीच में जीवन का वृक्ष है जिसे हम वास्तव में बाइबल के अंत में प्रकाशितवाक्य अध्याय 22 में पाते हैं, लेकिन पहले से ही अदन का बगीचा एक ऐसा स्थान था जहाँ आदम और हव्वा को उस जीवन का आनंद लेना था जिसे परमेश्वर ने उनके लिए प्रदान किया था जिसका प्रतीक जीवन का वृक्ष है।

लेकिन जब आप उत्पत्ति के अध्याय 3 के बाद परमेश्वर के निर्देशों और उसकी चेतावनियों को पढ़ते हैं तो पाते हैं कि पाप के कारण ही सभी की मृत्यु होती है। इसलिए, आप इन वंशावली को पढ़ना शुरू करते हैं और एक या दो अपवादों को छोड़कर सभी की वंशावली में एक बात समान है, लेकिन एक या दो अपवादों को छोड़कर सभी की मृत्यु होती है। तो, फिर सवाल यह है कि परमेश्वर मृत्यु और बुराई और मृत्यु से कैसे निपटेगा जो अब उसकी सृष्टि में प्रवेश कर चुकी है?

हम पुराने नियम के भविष्यसूचक ग्रंथों जैसे कि यशायाह अध्याय 25 में पुनरुत्थान की प्रत्याशा देखते हैं। यशायाह अध्याय 25 और उदाहरण के लिए श्लोक 8। यशायाह 25 और श्लोक 8 में यह कहा गया है। मैं वापस जाकर श्लोक 7 और 8 को पढ़ूंगा, जो वाक्य के बीच में शुरू होते हैं।

इस पर्वत पर, वह सभी लोगों को ढकने वाले कफन को नष्ट कर देगा, भेड़ें जो सभी राष्ट्रों को ढकती हैं। वह मृत्यु को हमेशा के लिए निगल जाएगा। प्रभु परमेश्वर सभी चेहरों से आँसू पोंछ देगा।

वह अपने लोगों का अपमान दूर करेगा। इसलिए, आपको पुनरुत्थान या जीवन देने की भाषा नहीं मिलती, बल्कि आपको मृत्यु को हराने या मृत्यु को निगलने की भाषा मिलती है। अगले अध्याय में, यशायाह के अध्याय 26 की आयत 18 से 21 तक।

हम बच्चे के साथ थे। हम प्रसव पीड़ा में तड़पते रहे, लेकिन हमने हवा को जन्म दिया। हम पृथ्वी पर उद्धार नहीं लाए हैं, और दुनिया के लोग जीवित नहीं हुए हैं। लेकिन आपके मृतक जीवित रहेंगे प्रभु।

उनके शरीर उठेंगे। जो लोग धूल में रहते हैं, वे जागें और खुशी से चिल्लाएँ। तुम्हारा हक़ सुबह की ओस की तरह है।

पृथ्वी अपने मृतकों को जन्म देगी। यशायाह अध्याय 65 और पद 20 एक नई सृष्टि के संदर्भ में। एक बार फिर, यशायाह ने अनन्त जीवन या पुनरुत्थान शब्द का उपयोग नहीं किया है, लेकिन वह स्पष्ट रूप से नई सृष्टि में एक समय की कल्पना करता है जहाँ समय से पहले मृत्यु और वह मृत्यु जिसका हम अनुभव करते हैं और वे परेशानियाँ और समस्याएँ जिनका हम अभी अनुभव करते हैं, अब नहीं होगी।

यहेजकेल अध्याय 37 में, हमने इसे कई मौकों पर एक नई वाचा के संदर्भ में पढ़ा है, लेकिन यहेजकेल 37 की शुरुआत में, लेखक को सूखी हड्डियों की घाटी का यह दर्शन होता है। फिर हड्डियाँ एक साथ आती हैं, और फिर उन पर मांस आता है, और फिर परमेश्वर उनमें जीवन फूंकता है - लगभग उत्पत्ति का एक दोहराव।

परमेश्वर इंसानों में जीवन फूंकता है। इसलिए, परमेश्वर इन सूखी हड्डियों में भी जीवन फूंकता है जो शरीर धारण करती हैं। अब, यह ज़रूरी नहीं कि व्यक्तिगत पुनरुत्थान को संदर्भित करता हो।

यह इस्राएल की भावी पुनर्स्थापना के संदर्भ में है, जिसे पुनरुत्थान और जीवन देने के संदर्भ में देखा जाता है। लेकिन हम वास्तव में नए नियम के कुछ लेखकों को परमेश्वर के लोगों के पुनरुत्थान के संदर्भ में इस पाठ को उठाते हुए देखेंगे। संभवतः कम से कम अधिकांश पुराने नियम के विद्वानों के दिमाग में, पुनरुत्थान के सबसे स्पष्ट संदर्भों में से एक दानियेल अध्याय 12 और श्लोक 2 और 3 में पाया जाता है। मैं श्लोक 1 से शुरू करूँगा। उस समय, माइकल, महान राजकुमार जो आपके लोगों की रक्षा करता है, उठेगा।

संकट का ऐसा समय आएगा, जैसा राष्ट्रों के आरम्भ से लेकर अब तक नहीं हुआ, परन्तु उस समय तेरे लोग, अर्थात् जितने नाम पुस्तक में लिखे हुए हैं, उन सभी को छुड़ाया जाएगा। बहुत से लोग भूमि की धूल में सोएंगे। बहुत से लोग जो भूमि की धूल में सोए हैं, वे जाग उठेंगे।

कुछ लोग अनंत जीवन के लिए और कुछ लोग शर्म और अनंत घृणा के लिए। जो बुद्धिमान हैं वे आकाश की चमक की तरह चमकेंगे, और जो लोग धार्मिकता में बहुतों की अगुवाई करते हैं वे हमेशा-हमेशा के लिए सितारों की तरह चमकेंगे। इसलिए, दानियेल अध्याय 12 और आयत 2 एक स्पष्ट संदर्भ प्रतीत होता है कि पुनरुत्थान अनंत जीवन के लिए है जबकि अन्य को न्याय के लिए उठाया जाता है।

तो, पुराने नियम में हम कम से कम पतनशील उत्पत्ति के प्रभावों के उलट होने की अवधारणा को देखते हैं। एक नई सृष्टि की वापसी। एक ऐसा समय जब मृत्यु को निगल लिया जाता है।

एक ऐसा समय जब परमेश्वर के लोग जी उठेंगे। जब इस्राएल को पुनरुत्थान जैसी घटना में बहाल किया जाएगा और जहाँ परमेश्वर के लोग अनंत जीवन के लिए जी उठेंगे। अब, मुझे लगता है कि यह नए नियम के बाकी हिस्सों में पुनरुत्थान की हमारी समझ की पृष्ठभूमि बनाता है, और इसलिए मैं जो करना चाहता हूँ वह यह है कि एक बार फिर से संक्षेप में शुरू करें, बस सुसमाचारों के साथ कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ करें और फिर कुछ प्रमुख विषयों को देखते हुए नए नियम के बाकी हिस्सों में पुनरुत्थान के महत्व को देखें।

तो, सबसे पहले, सुसमाचारों में यीशु के पुनरुत्थान का उल्लेख किया गया है। जैसा कि हमने मसीह की मृत्यु के साथ देखा, सभी सुसमाचार यीशु के पुनरुत्थान के संदर्भों के साथ समाप्त होते हैं। उनकी मृत्यु के बाद मसीह के पुनरुत्थान का विवरण।

जहाँ यीशु मसीह को शारीरिक रूप में उठाया जाता है और उसके लोग उसे पहचानते हैं। वह वास्तव में आता है और अपने लोगों के सामने प्रकट होता है। हम सुसमाचारों के बारे में बहुत कुछ बात कर सकते हैं, आप जानते हैं, यीशु के प्रकट होने और गायब होने या किसी ऐसी जगह के अंदर प्रकट होने की क्षमता के बारे में जहाँ दरवाजे बंद हैं।

इसलिए, ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु के पास एक भौतिक शरीर है, फिर भी यह उस शरीर से बहुत अलग है जो इस वर्तमान युग का हिस्सा है और इसमें हमारे वर्तमान अस्तित्व की सभी सीमाएँ हैं। लेकिन यह 1 कुरिन्थियों 15 है जो यीशु के पुनरुत्थान के महत्व पर जोर देता है, जिसे हम सुसमाचार के वृत्तांतों में वर्णित और प्रदर्शित पाते हैं। 1 कुरिन्थियों 15 की शुरुआत में, यीशु के पुनरुत्थान को हमारे ईसाई धर्म के मूल में होने के रूप में वर्णित किया गया है।

यीशु का पुनरुत्थान सुसमाचार का हिस्सा है जिसे पॉल को सौंपा गया था और जिसे अब वह अपने लोगों को सौंपता है। लेकिन हम बाद में देखेंगे कि सुसमाचार के बारे में 1 कुरिन्थियों 15 में क्या महत्वपूर्ण हो जाता है, मुझे खेद है कि मसीह के पुनरुत्थान के बारे में यह न केवल ईसाई धर्म के दिल में है और जैसा कि पॉल कहते हैं, इसके बिना, ईसाई धर्म टूटता हुआ प्रतीत होता है। हालाँकि, अध्याय 15 के बाकी हिस्सों में कम से कम दो कारणों से मसीह का पुनरुत्थान आवश्यक है।

नंबर एक, और हम इसे बाद में और अधिक विस्तार से देखेंगे। नंबर एक, यीशु मसीह का पुनरुत्थान भविष्य में हमारे पुनरुत्थान की गारंटी है। लेकिन दूसरा, यीशु का पुनरुत्थान और हमारा पुनरुत्थान बिल्कुल ज़रूरी है अगर परमेश्वर को अंततः विजयी होना है और अगर परमेश्वर

को मृत्यु को हराना है। पॉल का तर्क यह लगता है कि अगर हम शारीरिक और शारीरिक रूप से नहीं जी उठे हैं, तो परमेश्वर ने अंततः मृत्यु को नहीं हराया है।

मृत्यु का अभी भी अंतिम शब्द है। इसलिए, पुनरुत्थान के बारे में जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि पुनरुत्थान केवल मृत्यु के बाद का जीवन या अस्तित्व नहीं है, बल्कि पुनरुत्थान में हमारे वर्तमान भौतिक शरीर की मृत्यु के बाद एक भौतिक शारीरिक अस्तित्व का भौतिक उत्थान शामिल है। 1 कुरिन्थियों 15 यह पूरी तरह से स्पष्ट करता है कि यीशु मसीह फिर से न केवल मृत्यु के बाद जीवन या न केवल एक शाश्वत अस्तित्व है, बल्कि एक शारीरिक भौतिक अस्तित्व है जिसका उदाहरण यीशु की अपनी मृत्यु में है, बल्कि हमारे यीशु के अपने पुनरुत्थान में भी है, मुझे खेद है लेकिन हमारे भविष्य के पुनरुत्थान में भी उदाहरण है, जो कि मृत्यु को अंततः पराजित करने के लिए आवश्यक है।

इसलिए, यीशु का पुनरुत्थान सुसमाचारों में यीशु की मृत्यु के लिए आवश्यक परिणाम के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और फिर 1 कुरिन्थियों 15 इसे और आगे खोलता है। यदि यीशु को पुनर्जीवित नहीं किया गया था, तो ईसाई धर्म का दिल टूट गया क्योंकि मृत्यु अभी भी अंतिम निर्णय लेती है। मृत्यु अभी भी अंतिम निर्णय लेती है।

तो, यह कहने के बाद मैं बस कुछ मिनट यीशु की मृत्यु या यीशु के पुनरुत्थान के महत्व पर विचार करना चाहता हूँ। यीशु के पुनरुत्थान ने क्या हासिल किया? एक बार फिर हम कई बातें कह सकते हैं, लेकिन मैं बस कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालना चाहता हूँ। सबसे पहले, यीशु की मृत्यु यीशु को मसीहा के रूप में स्थापित करना था, या मुझे खेद है, यीशु का पुनरुत्थान यीशु को दाऊद के विजयी शासक पुत्र के रूप में मसीहा के रूप में स्थापित करना था।

रोमियों के अध्याय 1 और पद 3 में पॉल के पत्रों की शुरुआत में। मैं मसीह की मृत्यु के बारे में इतना अधिक बात करता रहा हूँ कि मुझे पुनरुत्थान में संक्रमण करने में कठिनाई हो रही है, लेकिन यीशु का पुनरुत्थान यीशु को मसीहा के रूप में स्थापित करना था। रोमियों को पॉल के पत्रों के अध्याय 1 में पद 3।

मैं वापस जाकर पद 2 पढ़ूंगा। सुसमाचार में, पौलुस पद 1 में कहता है कि वह सुसमाचार का सेवक है। पद 2, वह सुसमाचार है जिसका वादा परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से पवित्र शास्त्रों में अपने पुत्र के बारे में पहले ही कर दिया था, जो अपने सांसारिक जीवन में दाऊद का वंशज था और जो पवित्रता की आत्मा के माध्यम से, मृतकों में से जी उठने के द्वारा सामर्थ्य में परमेश्वर का पुत्र नियुक्त किया गया था, यीशु मसीह हमारा प्रभु। तो, पुनरुत्थान यीशु का अपने मसीहाई शासन और अपने मसीहाई शासन में प्रवेश या स्थापना है, जैसा कि दाऊद के पुत्र में है।

इफिसियों के अध्याय 1 में भी हमें ऐसा ही विषय मिलता है। इफिसियों का अध्याय 1 श्लोक 19 से शुरू होता है और इसमें परमेश्वर और उसके परमेश्वर की हमारे लिए अतुलनीय महान शक्ति का उल्लेख किया गया है जो विश्वास करते हैं। वह शक्ति वही शक्ति है जो उसके पास है, वही शक्ति जो परमेश्वर ने तब दिखाई थी जब उसने मसीह को मृतकों में से जिलाया और उसे स्वर्गीय स्थानों में दाहिने हाथ पर बैठाया।

दाहिना हाथ भजन 110 का संदर्भ है, जैसा कि हम पहले ही दाऊद के शाही भजन को देख चुके हैं। सभी नियमों और अधिकार शक्ति और प्रभुत्व और हर नाम से कहीं ऊपर, जिसका आह्वान न केवल वर्तमान युग में बल्कि आने वाले युग में भी किया जाता है और परमेश्वर ने सभी चीजों को उसके पैरों के नीचे रखा और उसे चर्च के लिए हर चीज का मुखिया नियुक्त किया। इसलिए, इफिसियों 1 में भी, यीशु के पुनरुत्थान को एक अर्थ में यीशु मसीह की स्थापना या नियुक्ति या उसके मसीहाई शासन में प्रवेश के रूप में देखा जाता है, जहाँ अब वह पिता के दाहिने हाथ पर शासन करता है, क्योंकि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से उठाया है और उसे स्वर्गीय क्षेत्रों में बहुत ऊपर बैठाया है।

दूसरा, यीशु के पुनरुत्थान को मृत्यु पर विजय और बुराई पर विजय के रूप में देखा जाता है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 1. मैं उस पुस्तक को छोड़ नहीं सकता। फिर से, यह एक ऐसी पुस्तक है जिसे हम अक्सर अंतिम समय की चीजों से जोड़ते हैं, लेकिन, जैसा कि मैंने कहा, इसमें बहुत समृद्ध क्राइस्टोलॉजी भी है।

पुस्तक की शुरुआत में ही, हम जॉन के उद्घाटन दर्शन को पाते हैं, वास्तव में जॉन के यीशु मसीह के उद्घाटन दर्शन में, पद 9 से शुरू करते हुए, हमें यह दिलचस्प संदर्भ मिलता है जब जॉन मसीह को देखता है, और वह पद 17 में मृत के रूप में नीचे गिर जाता है, फिर यीशु उसके पास आता है और कहता है, डरो मत मैं पहला और आखिरी हूँ मैं जीवित हूँ मैं मर गया था और अब देखो मैं हमेशा के लिए जीवित हूँ, और मेरे पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ हैं। इसलिए, क्रूस पर यीशु की मृत्यु एक विजय है। उनका पुनरुत्थान मृत्यु और बुराई पर विजय है, और इसलिए जॉन को डरने की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, हम वास्तव में उससे भी पहले, अध्याय 1 के पद 5 में उस अभिवादन को देखते हैं जिसे हमने कई अवसरों पर पढ़ा है।

यीशु मसीह को यीशु मसीह की ओर से आपके लिए अनुग्रह और शांति का एक वफादार गवाह बताया गया है, जो मृतकों में से ज्येष्ठ पुत्र और पृथ्वी के राजाओं का शासक है। यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक के लिए महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से ईसाइयों के एक समूह के लिए; उनमें से कम से कम एक अपनी गवाही के लिए मर चुका है, और अन्य जल्द ही उसका अनुसरण करने वाले हैं। यीशु मसीह को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जिसने मृत्यु को हराया है और अपने पुनरुत्थान के द्वारा बुराई और बुरी शक्तियों को हराया है।

हमने इस विषय को इफिसियों के अध्याय 1 में भी देखा, वह पाठ जिसे मैंने अभी कुछ समय पहले पढ़ा था। यीशु का पुनरुत्थान जो उसे स्थापित करता है या उसके मसीहाई शासन में प्रवेश है, उसे स्वर्गीय क्षेत्रों के शासकों और अधिकारियों पर अधिकार और शासन की स्थिति में भी रखता है। हम पहले कुरिन्थियों 15 के प्रसिद्ध पुनरुत्थान पाठ में भी कुछ ऐसा ही देखते हैं।

पहले 24, फिर अंत तब आएगा जब वह पुत्र परमेश्वर पिता को राज्य सौंप देगा, जब वह सभी प्रभुत्व और अधिकार और शक्ति को नष्ट कर देगा क्योंकि उसे तब तक शासन करना होगा जब तक कि वह अपने सभी शत्रुओं को अपने पैरों तले न कर दे, नष्ट होने वाला अंतिम शत्रु मृत्यु है। फिर से, यह मसीह के पहले फल होने के अंतिम चरण में आता है, फिर जब वह आता है तो वे

लोग जो उसके हैं। इन ग्रंथों और शायद अन्य में मसीह का पुनरुत्थान मृत्यु पर अंतिम विजय और बुराई पर विजय है।

मसीह का पुनरुत्थान यीशु के मसीहा होने की पुष्टि भी करता है। यानी, यीशु का पुनरुत्थान ही उसका औचित्य सिद्ध करता है। यह दिखाता है कि यीशु वही है जो वह होने का दावा करता है।

यह उसके दुख में उसे सही साबित करता है। इसलिए यीशु को पीड़ा होती है, और यीशु को पीड़ा होती है और वह मर जाता है, लेकिन फिर उसका पुनरुत्थान उसे सही साबित करता है और दिखाता है कि वह वास्तव में परमेश्वर का मसीहा है। दुनिया ने उसके साथ जिस तरह का व्यवहार किया, उसके विपरीत, पुनरुत्थान एक प्रदर्शन है कि यीशु ही मसीहा है।

यह परमेश्वर के मसीहा का औचित्य सिद्ध करना है। प्रेरितों के काम अध्याय 2 में, हम देखते हैं कि यह एक तरह से पिनोकेस्त के दिन पतरस के उपदेश का बोझ है कि इस तथ्य के बावजूद कि दुनिया ने उसे मौत के घाट उतार दिया और उसके श्रोताओं और विरोधियों ने उसे मौत के घाट उतार दिया, परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित करके मसीह को उचित ठहराया। इसलिए, अध्याय 2 और श्लोक 24 में, मैं वापस आऊंगा और 23 पढ़ूंगा: यह व्यक्ति, यीशु मसीह, परमेश्वर की जानबूझकर योजना और पूर्वज्ञान द्वारा तुम्हें सौंपा गया था।

वैसे, यह एक और विषय है जिस पर हम विचार नहीं करेंगे, लेकिन यीशु मसीह की मृत्यु, क्रूस और उसका पुनरुत्थान परमेश्वर की योजना के हिस्से के रूप में उसकी मृत्यु के संदर्भ हैं। यह परमेश्वर की संप्रभु योजना और मार्गदर्शन के तहत और उसके द्वारा आयोजित किया जाता है। लेकिन यह आदमी जिसे परमेश्वर की जानबूझकर योजना और पूर्वज्ञान के द्वारा तुम्हारे हवाले किया गया था, और तुमने दुष्ट लोगों की मदद से उसे क्रूस पर कीलों से ठोककर मौत के घाट उतार दिया।

पद 24: परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुआओं में से जिलाया, और मृत्यु की पीड़ा से छुड़ाया, क्योंकि मृत्यु का उस पर अधिकार करना असम्भव था। तो, आप इस विषय को देखते हैं कि मृत्यु पर विजय और मृत्यु पर विजय भी है, परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुआओं में से जिलाया, जिसे उन्होंने मार डाला था। पद 32 में भी, परमेश्वर ने इस यीशु को जीवन में जिलाया, और हम इसके गवाह हैं।

परमेश्वर के दाहिने हाथ पर विराजमान होकर, उसे पिता से प्रतिज्ञात पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ, जिसने उसे उन पर उंडेला है, जिन्हें तुम अब यहाँ देखते हो। तो फिर आयत 36 इसलिए सभी इस्राएलियों को इस बात का भरोसा होना चाहिए कि परमेश्वर ने इस यीशु को, जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया था, उसके पुनरुत्थान के माध्यम से प्रभु और मसीहा दोनों बनाया है, और इसलिए आयत 36 इस बात के चरमोत्कर्ष पर खड़ी है कि मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से परमेश्वर ने अब इस मसीहा को बनाया है, इस यीशु को तुम यहूदी अधिकारियों और अन्य लोगों ने मार डाला है, अब यीशु को परमेश्वर ने उसे जीवन में लाकर उसे सही ठहराया है। इसलिए, मसीहा के रूप में यीशु का सही ठहराया जाना पुराने नियम और नए नियम का एक महत्वपूर्ण विषय है।

चौथा, सबसे पहले यीशु को मसीहा के रूप में स्थापित करना। यह यीशु का अपने पुनरुत्थान के माध्यम से मसीहाई शासन में प्रवेश है। दूसरा, उनका पुनरुत्थान मृत्यु पर विजय और बुराई पर विजय था। तीसरा, यह यीशु का मसीहा के रूप में औचित्य सिद्ध करना था।

चौथा, यीशु मसीह का पुनरुत्थान नए युग या नई सृष्टि का उद्घाटन करता है। रोमियों अध्याय 6 में हमने देखा कि मसीह के साथ जी उठने के कारण, मसीह के साथ जी उठने के कारण, विश्वास के द्वारा मसीह के साथ एकता में जुड़ जाने के कारण, हम न केवल उसकी मृत्यु में बल्कि उसके पुनरुत्थान में भी भागीदार हैं। इसलिए, जैसा कि हमने कहा, यीशु मसीह की मृत्यु पुराने युग को समाप्त करती है, पाप और मृत्यु के प्रभुत्व को समाप्त करती है, लेकिन यीशु की मृत्यु फिर एक नई सृष्टि का उद्घाटन करती है।

इसलिए पॉल कह सकता है, खास तौर पर अध्याय 6 और पद 4 में, इसलिए हम उसके साथ बपतिस्मा के ज़रिए मृत्यु में दफनाए गए, ताकि जैसे मसीह को पिता की महिमा के ज़रिए मरे हुआं में से ज़िंदा किया गया, वैसे ही हम भी जीवन की नईता में जी सकें, या हम भी एक नया जीवन जी सकें। यानी, यीशु मसीह की मृत्यु एक नई सृष्टि का उद्घाटन करती है, और फिर हम मसीह से जुड़ने के कारण उस नई सृष्टि में भाग लेते हैं ताकि हम जीवन की नईता, जीवन की नई गुणवत्ता में चलने में सक्षम हों। कुलुस्सियों, मुझे खेद है, 2 कुरिन्थियों अध्याय 5, एक पाठ जिसे हमने पहले ही देखा है, अध्याय 5 और पद 17 में, पॉल कहता है, इसलिए, यदि कोई मसीह में है, तो नई सृष्टि आ गई है।

पुराना चला गया है। देखो, नया यहाँ है। मेरा सुझाव है कि यह यशायाह अध्याय 65 और श्लोक 16 और 17 में नई सृष्टि और उसके बाद यशायाह द्वारा की गई भविष्यवाणी का संकेत है। अब, पॉल सुझाव देता है कि यदि आप मसीह में हैं, तो एक नई सृष्टि है।

आप एक नई सृष्टि के सदस्य हैं और उसमें भाग लेते हैं। अब, ऐसा क्यों है? मसीह से संबंधित होना एक नई सृष्टि में योगदान क्यों देता है? मुझे लगता है कि अगर आप 2 कुरिन्थियों 5 की आयत 15 पर वापस जाएँ, तो पॉल कहता है, और वह सभी के लिए मरा ताकि जो जीवित हैं वे अब अपने लिए न जीएँ, बल्कि उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर से जी उठा। तो एक बार फिर पुनरुत्थान के संदर्भ पर ध्यान दें।

यीशु का पुनरुत्थान नई सृष्टि का उद्घाटन है, इस अर्थ में कि यीशु का पुनरुत्थान नई सृष्टि के जीवन में भागीदारी है। और अब हम भी उसके साथ जुड़े होने के कारण उस जीवन में भाग लेते हैं। लेकिन स्पष्ट रूप से, मैं रोमियों 6 और 2 कुरिन्थियों 5 के साथ, यशायाह 65 जैसे ग्रंथों के प्रकाश में सोचता हूँ, यीशु का पुनरुत्थान उद्धार के नए युग, नई सृष्टि का उद्घाटन करता है जिसमें हम भी मसीह के साथ जुड़े होने के कारण भाग लेते हैं।

अब, अगले भाग में, हम पुनरुत्थान पर अपनी चर्चा समाप्त करेंगे, और फिर हम दूसरे विषय पर आगे बढ़ेंगे, और वह है, हम पवित्र आत्मा पर विचार करेंगे। और फिर से पुराने नियम से शुरू करते हुए पवित्र आत्मा के धर्मशास्त्रीय, बाइबिल-धर्मशास्त्रीय विषय के नए नियम के विकास को देखते हैं।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन और नए नियम के धर्मशास्त्र पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला है। यह सत्र 23 है, यीशु, मृत्यु/पुनरुत्थान।